शिक्षा में कला

गगन बग्गा
कला अध्यापिका, आर्मी स्कूल, अहमदनगर

कला पेन्टिंग और ड्रॉइंग से कुछ अधिक है। यह तो सोचने का एक तरीका है, देखने और जीने का एक तरीका है। कला का मतलब है व्यवस्थापन और चयन। व्यवस्थापन और चयन का मतलब है डिजाइन। डिजाइन का मतलब है अनुक्रम जिसका इस्तेमाल करना चाहिए और आनन्द उठाना चाहिए; जिसे जीना चाहिए। संक्षेप में, यह सराहना का मूल है और सही भावना एवं सही मूल्यों का मामला है। यह सुन्दर वस्तुओं के प्रति जागरूक होने एवं उनकी सराहना करने की बात है।

शिक्षा को एक अनुभव के रूप में परिभाषित किया गया है, विशेष करके अनुभव की पुनर्रचना या यूँ कहें कि शिक्षा नए अनुभवों के प्रकाश में अनुभवों की निरन्तर पुनर्रचना है। कला एक ऐसा सतत अनुभव है जो हमें जीवन से ही मिलता है। वास्तव में कला जीवन के हर क्षेत्र में व्याप्त है। यदि वास्तुकला के डिजाइन न हों तो हमारे शहर लकड़ी के झोपड़े मात्र बनकर रह जाएँगे।

शिक्षा का कोई भी सामान्य कार्यक्रम कला की अच्छी गतिविधियों के बिना अधूरा है क्योंकि बच्चे को बेहतर बौद्धिक, भावनात्मक एवं सामाजिक विकास की दिशा में ले जाने वाले महत्त्वपूर्ण एवं मुक्तिदायक कारकों में से यह भी एक है।

बच्चे द्वारा बनाई गई ड्रॉइंग उसकी गति का परिणाम है जो उसकी भावनाओं एवं सोच से निर्देशित होती है। बच्चा जो कुछ भी आड़ा–तिरछा बनाता है वह उसकी सोच एवं भावनाओं से संचालित होता है और उसके अनुभव से फूट निकलता है।

एक बच्चे के विकास के निश्चित चरण होते हैं–

परिचालन चरण: 2 से 3 वर्ष

अकसर बच्चा आड़ी–तिरछी रेखाएँ खींचकर कहानी सुनाता है। उदाहरण के लिए वह कह सकता है, "यह एक फूल है या कार है," जबकि उसमें फूल या कार जैसा कुछ भी नजर नहीं आता।

प्रयोगात्मक चरण: 4 से 5 वर्ष

इस चरण में बच्चे की मांसपेशियाँ उसकी सोच का अनुसरण करने में सक्षम हो जाती हैं। इस चरण में वह रेखा तथा रंग को व्यवस्थित करने में भी सक्षम होता है और मानव चेहरों को चित्रित करने की कोशिश करता है विशेष रूप से अपने परिवार के करीबी सदस्यों के चित्र।

छोटे बच्चों के लिए मिट्टी के मॉडल बनाने की गतिविधियाँ महत्त्वपूर्ण तथा सन्तोषजनक होती हैं।

योजनाबद्ध चरण: 6 से 8 वर्ष

इस चरण में बच्चे एक विशेष सूत्र या प्रतीक का विकास

करते हैं जो अस्थायी रूप से मानव आकृति का प्रतिनिधित्व करने के लिए सन्तोषजनक होता है। गोलाकार, त्रिकोणीय आकार या आयताकार का प्रयोग सिर, शरीर, हाथ, पैर या नैन–नक्श के लिए किया जा सकता है एवं वक्र तथा सीधी अकेली या दोहरी रेखाओं का प्रयोग बाँहों व पैरों के लिए किया जा सकता है। छह से आठ वर्ष की इस अवधि की शुरुआत में अकसर आसमान को पन्ने के ऊपरी हिस्से में एक नीली पट्टी से दिखाया जाता है और धीरे–धीरे बच्चे पूरे आसमान में रंग भरने लगते हैं।

कुछ क्राफ्ट जैसे कि छपे हुए पैटर्न को काटना, कार्ड बनाना आदि भी लोकप्रिय हैं।

चरण: 9 से 12 वर्ष

बच्चे और अधिक स्पष्ट एवं सहज तरीके से ड्रॉइंग करने लगते हैं। इस अवधि में अन्य बच्चों के चित्र बनाने का प्रयास भी किया जाता है।

चरण: 12 से 15 वर्ष

इस अवस्था में बच्चे परिपक्व हो जाते हैं व समूहों में स्वतंत्र रूप से काम करना पसन्द करते हैं और विभिन्न सामग्रियों के साथ प्रयोग करने लगते हैं।

मेरा अपना अनुभव

- बच्चों को समूहों में काम करना अच्छा लगता है। कला में हम रंगों एवं अन्य सामग्रियों के साथ प्रयोग कर सकते हैं। जिन बच्चों में आत्मविश्वास थोड़ा कम हो वे पृष्ठभूमि या छोटी वस्तुओं को पेंट कर सकते हैं तथा जटिल व महत्त्वपूर्ण चीजों को अधिक क्षमतावान बच्चे पेंट कर सकते हैं। समूह में बच्चे अलग–अलग विचारों एवं रचनात्मकता का उपयोग कर सकते हैं।
- सरल से जटिल विषयों की ओर बढ़ने से बच्चे आत्मविश्वासी बनते हैं।
- कला की वस्तुओं और प्रक्रियाओं पर रंगीन फिल्में एवं स्लाइड प्रेरित करने के साथ–साथ जानकारी भी देती हैं।
- कक्षा में संगीत बजाना रचनात्मकता का माहौल पैदा करता है।
- कलाकार और उसकी कला को देखना प्रेरक होता है।
- अगर कोई विद्यार्थी किसी विशेष कौशल में अच्छा है तो शिक्षक को चाहिए कि वह उसे विकसित और प्रदर्शित करने के अवसर प्रदान करे।
- विषय एवं माध्यम के चुनाव की स्वतंत्रता होनी चाहिए। उदाहरण के लिए–हो सकता है किसी बच्चे को पेन्टिंग करनी अच्छी न लगती हो पर वह मिट्टी के साथ खुशी–खुशी काम करता हो।